1977F Rama Jain

Ek Avismarniya Sansmaran (In Apararigrah, 1977)

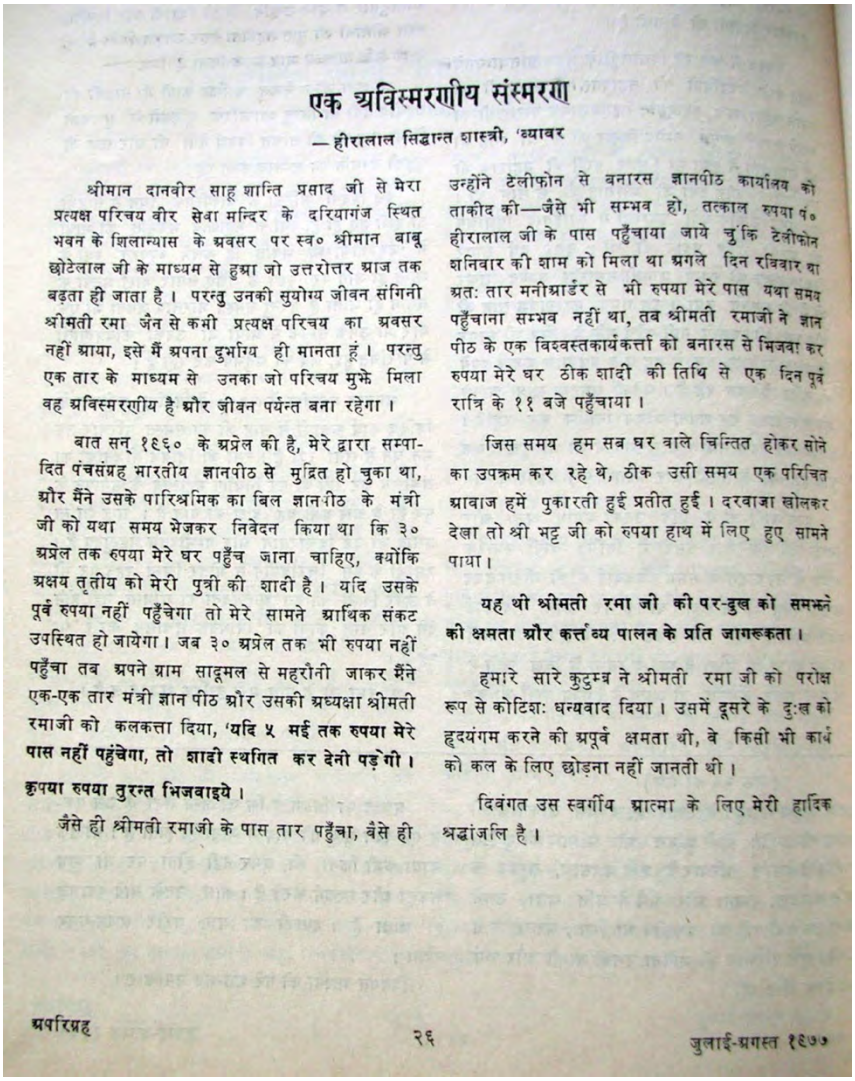

एक अविस्मरणीय संस्मरण

— हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री, 'व्यावर

श्रीमान दानवीर साहू शान्ति प्रसाद जी से मेरा प्रत्यक्ष परिचय वीर सेवा मन्दिर के दरियागंज स्थित भवन के शिलान्यास के अवसर पर स्व० श्रीमान बाबू छोटेलाल जी के माध्यम से हुआ जो उत्तरोत्तर आज तक बढ़ता ही जाता है। परन्तु उनकी सुयोग्य जीवन संगिनी श्रीमती रमा जैन से कभी प्रत्यक्ष परिचय का अवसर नहीं आया, इसे मैं अपना दुर्भाग्य ही मानता हूं। परन्तु एक तार के माध्यम से उनका जो परिचय मुझे मिला वह अविस्मरणीय है और जीवन पर्यन्त बना रहेगा।

बात सन् १९६० के अप्रेल की है, मेरे द्वारा सम्पादित पंचसंग्रह भारतीय ज्ञानपीठ से मुद्रित हो चुका था, और मैंने उसके पारिश्रमिक का बिल ज्ञानपीठ के मंत्री जी को यथा समय भेजकर निवेदन किया था कि ३० अप्रेल तक रुपया मेरे घर पहुँच जाना चाहिए, क्योंकि अक्षय तृतीय को मेरी पुत्री की शादी है। यदि उसके पूर्व रुपया नहीं पहुँचेगा तो मेरे सामने आर्थिक संकट उपस्थित हो जायेगा। जब ३० अप्रेल तक भी रुपया नहीं पहुँचा तब अपने ग्राम सादूमल से महरौनी जाकर मैंने एक-एक तार मंत्री ज्ञान पीठ और उसकी अध्यक्षा श्रीमती रमाजी को कलकत्ता दिया, **'यदि ५ मई तक रुपया मेरे पास नहीं पहुंचेगा, तो शादी स्थगित कर देनी पड़ेगी। कृपया रुपया तुरन्त भिजवाइये।**

जैसे ही श्रीमती रमाजी के पास तार पहुँचा, वैसे ही उन्होंने टेलीफोन से बनारस ज्ञानपीठ कार्यालय को ताकीद की—जैसे भी सम्भव हो, तत्काल रुपया पं० हीरालाल जी के पास पहुँचाया जाये चूंकि टेलीफोन शनिवार की शाम को मिला था अगले दिन रविवार था अतः तार मनीआर्डर से भी रुपया मेरे पास यथा समय पहुँचाना सम्भव नहीं था, तब श्रीमती रमाजी ने ज्ञान पीठ के एक विश्वस्तकार्यकर्त्ता को बनारस से भिजवा कर रुपया मेरे घर ठीक शादी की तिथि से एक दिन पूर्व रात्रि के ११ बजे पहुँचाया।

जिस समय हम सब घर वाले चिन्तित होकर सोने का उपक्रम कर रहे थे, ठीक उसी समय एक परिचित आवाज हमें पुकारती हुई प्रतीत हुई। दरवाजा खोलकर देखा तो श्री भट्ट जी को रुपया हाथ में लिए हुए सामने पाया।

यह थी श्रीमती रमा जी की पर-दुख को समझने की क्षमता और कर्त्तव्य पालन के प्रति जागरूकता।

हमारे सारे कुटुम्ब ने श्रीमती रमा जी को परोक्ष रूप से कोटिशः धन्यवाद दिया। उसमें दूसरे के दुःख को हृदयंगम करने की अपूर्व क्षमता थी, वे किसी भी कार्य को कल के लिए छोड़ना नहीं जानती थी।

दिवंगत उस स्वर्गीय आत्मा के लिए मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि है।